IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पत्र साहित्यक वैशिष्ट्य

डॉ॰ दुर्गानन्द ठाकुर

सहायक प्राचार्य

मैथिली विभाग

के॰ एस॰ कॉलेज, लहेरियासराय,दरभंगा

संस्कृत भाषाक पत्रम् शब्दक तद्भव रूप थिक-पत्र। पत्रकेँ मैथिली भाषामे 'चिट्ठी' ओ 'पत्र', उर्दू भाषामे 'खत', कन्नड़ भाषामे 'कागद', तमिल भाषामे 'काडिद', तेलगू भाषामे 'उत्तरम', 'जाब' आ 'लेख' आ विविध भाषामे भिन्न-भिन्न नामसँ सम्बोधित कएल जाइत अछि।

पत्र लिखबाक आओर भेजबाक परम्परा प्राचीन कालहिसँ आबि रहल अछि। पहिने भोज पत्र, ताड़ पत्र, ताम्र पट आदि पर कलमक आविष्कारसँ पूर्व तीर, पक्षीक पाँखि, तेजपात आदिसँ पत्र लिखल जाइत छल। 'पत्र'क अर्थ पात आ 'पट'क पट्टी सेहो होइत अछि। संचार आ परिवहन माध्यमक अभावमे कबूतर आ संदेशवाहक द्वारा पत्र भेजल जाइत छल। 'पत्र' आ 'पत्रलेखन'क विषय 'मणिपद्मक पत्र' पोथीक प्रकाशीय शीर्षकक अन्तर्गत राजनन्दन लाल दासजी लिखैत छथि-

"पत्र लेखन एक कला थिक। पत्र कोना लिखल जाय, कोना आरम्भ कएल जाय, कोना समाप्त कएल जाय, संगहि कथ्यक सम्प्रेषणीयता विशेष महत्वक होइछ। पत्रसँ लेखकक शिष्टता, विनम्रता, सांस्कृतिक चेतना, ओकर व्यक्तित्व, चिन्तन, विद्वता, क्रिया-कलाप आदिक परिचय सेहो भेटैत अछि। विश्व इतिहासमे, साहित्य जगतमे कतोक एहेन पत्र महापुरूष लोकनिक द्वारा तथा साहित्य मनीषी द्वारा लिखल विशेष महत्वपूर्ण मानल जाइछ। एहि पत्र सभमे युगीन चिन्तनधाराक आभास तऽ भेटितहि अछि, संगहि भावी पीढ़ीक हेतु प्रेरणादायक तथा मार्गदर्शन सेहो।"1

केदार काननजीक कहब छनि जे- "हमरा सभकेँ ज्ञात अछि जे महाकवि विद्यापतिक 'लिखनावली' कोनो मैथिलक लिखल पत्र-साहित्यक उपलब्ध आदिकृति थिक।"2

आधुनिक मैथिली साहित्यमे पत्र लिखब कहियाआ किनका द्वारा प्रारम्भ भेल छल, ताहि प्रंसगमे श्री शंकरदेव झाक विचार द्रष्ट्व्य थिक- "मैथिली भाषाक आधुनिक साहित्यमे सेहो पत्रात्मक शैलीक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। मैथिलीक कथा- विधामे सम्भवतः सर्वप्रथम हरिनन्दन ठाकुर सरोज पत्रात्मक शैलीमे 'एक बरियातीक चिट्ठी नामसँ एक कथा लिखने छलाह जे 'मिथिला' (वर्ष-1, अंक-11, सन 1336 फाल्गुन) मे प्रकाशित भेल छल।"3

तदुत्तर मणिद्मजी, हरिमोहन झा, रामदेव झा, सुभद्र झा, मधुपजी, आरसी प्रसाद सिंह, भीमनाथ झा, जीवकान्त, मार्कण्डय प्रवासी प्रभृतिक पत्र गद्य आ पद्य साहित्यक विविध विधामे प्रकाशित भेल।

वर्तमानमे मैथिली साहित्यक अन्तर्गत पत्र विधा क्रमशः विलुप्त होइत जा रहल अछि, जखन कि पत्रक कतोक वैशिष्ट्य आजुक परिप्रेक्ष्यमे प्रासंगिकेँ नहि अनिवार्यो बुझाना जाइत अछि, यथा-

भाषा ओ व्याकरणक ज्ञान-

समय-समयपर पत्र लिखैत आ पढ़ैत रहलासँ उक्त भाषा पर विशेष पकड़ भऽ जाइत अछि। कतोक कम पढ़ल-लिखल लोकक सरल-सहज शब्द ओ परिमार्जित शैलीमे लिखल पत्र पढ़लासँ हुनक कृतितवक संगहि व्यक्तित्वक वैशिष्ट्य उजागर होइत अछि। जतेक बेसी लोक पत्र पढ़त आ लिखत हुनक भाषामे ततेक निखार आयत। पत्र लेखक आ पाठककेँ भाषाक ज्ञानक संगहि व्याकरणक समुचित ज्ञान सेहो भऽ जाइत छनि, यथा- स्त्रीलिंग-पुल्लिंगक, एकवचन-बहुवचन, संज्ञा-सर्वनाम, विशेषण- क्रिया आदिक। अतएव हम कहि सकैत छी जे बराबर पत्र पढ़ला आ लिखला सँ उक्त भाषाक ज्ञानक संगहि व्याकरण ज्ञानमे सेहो वृद्धि होइत अछि, जे कोनो पत्र लेखकक आरम्भिक आ अन्तक पत्रकेँ पढ़लासँ सुस्पष्ट भऽ जाएत। कहलो गेल अछि- 'करत-करत अभ्यासके जड़मति होत सुजान'।

भावनात्मक सम्बन्ध-

पत्रमे हृदयक निश्छल उद्गार प्रदर्शित होइत अछि, जे पत्र- लेखक आ पत्र प्राप्तकर्ता बीच भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि आ इएह सम्बन्ध पत्राचारकेँ दीर्घजीवी बनबैछं परस्पर पत्राचार वर्षो धरि चलैत रहबाक मुख्य कारण थिक भावनात्मक सम्बन्ध। भावनात्मक सम्बन्ध आ आरसी प्रसाद सिंहक विषयमे कीर्तिनारायण मिश्र लिखैत छथि- "प्रत्येक पत्र पत्र-लेखक आ पत्र- प्राप्तकर्ताक भावनात्मक सम्बन्धकेँ उद्घाटित करैत छैक, भावेतिहासकेँ वर्तमान फलकपर लऽ अबैत छैक। आरसी बाबू तँ सदिखन भावनाक सागरमे समाधिसँ लगौने रहैत छलाह। हुनक ओहि भाव-समाधिसँ प्रकट प्रत्येक शब्द खाहे ओ हुनक कोनो पोथीमे हो वा कोनो पत्र-पत्रिकामे वा व्यक्तिगत पत्रमे- सहजहि मर्मस्पर्शी होइत छल। बाल्यवस्थेसँ हमरा हुनक स्नेह प्राप्त होइत रहल-ई हमर सौभाग्य छल। ओ सामर्थ्यवान् उदारचरित छलाह आ आजीवन अपन उदारताक अमृत जेना सभकेँ पिआबैत रहलथिन, हमरो पिआबैत रहलाह।"4 'मधुपक पत्र' पोथी मध्य पत्रक अवलोकनसँ मधुपजी आ भीमबाबूक बीच प्रगाढ़ भावनात्मक संबंध छलनि, कहबामे कनेको तारतम्य नहि अछि। मधुपजी पत्र मध्य कखनहु हुनका प्रोत्साहन दैत छथि तऽ कखनहु हुनक गुणक गुणगान करैत छथि आ भावनाक वशीभूत भऽ हुनक दुखसँ दुखि होइत लिखैत छथि-

"चिरंजीवी बाबू श्रीभीम शुभोदय!

सहस शुभाशीर्वाद!

कुशल लिखू की,

भीषण दुःखद समाचार सुनि

अहाँकेर परिवार सहित

बनि गेलहुँ हम सविषाद।"5

पत्र-लेखकक मनोवृतिक ज्ञान-

कोनो व्यक्तिक पत्र सभकेँ पढ़लासँ हुनक सोच-विचार, भावना ओ भाषिक ज्ञान आदि विषयक जानकारी प्राप्त होइत अछि। कोनो व्यक्ति उग्र स्वभावक होइत छनि तऽ कोनो व्यक्तिक शांत, किनकोमे सामाजिकता ओ व्यवहारिकता रहैछ तऽ किनकोमे नहि आ केओ ठाँहि-पठाँहि बजैछ तऽ केओ घुमा कऽ प्रेमपूर्वक। एहि सब बातक विस्तृत जानकारी कोनो व्यक्तिक पत्र सभकेँ पढ़लासँ ज्ञात होइत अछि। वैयक्तिक पत्र आ पत्र लेखकक मनोवृतिक सम्बन्धमे श्रीशंकरदेव झाक विचार द्रष्टव्य थिक-

"मुदा पत्र- साहित्य कहि कऽ जखन चर्चा कयल जाइछ तँ ओकर अर्थ थिक विशुद्ध रूपसँ कोना वास्तविक व्यक्ति द्वारा लिखल गेल वैयक्तिक पत्र सभ विभन्न प्रयोजनसँ, विभिन्न अवसर पर लिखल गेल वैयक्तिक पत्र सभ अतीतक अनमोल धरोहर ओ सूचनाक एक महत्त्वपूर्ण आ प्रामाणिक स्रोतक रूपमे मान्य होइत अछि। इतिहास-लेखनक हेतु ग्राह्य साधनमे प्राचीन पत्रकेँ सेहो प्रमुख स्रोतक रूपमे स्थान देल जाइत अछि। एहि पत्र सबसँ प्राप्त सूचना ओ टिप्पणी सब आन स्रोतक तुलनामे बेसी विश्वसनीय ओ यथार्थक समीप होइद। पत्रक लेखक खाहे कोनो साहित्यकार, चिन्तक, विशेषज्ञ, राजनीतिज्ञ होथु वा नितान्त सामान्य व्यक्ति हुनक पत्रसँ महत्त्वपूर्ण सूचनादि प्राप्त होइछ। एहि व्यक्तिगत पत्रसँ पत्र-लेखकक व्यक्तित्व,

चिन्तन ओ दृष्टिकोणक परिचयक संगहि समकालीन सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक ओ राजनीतिक परिस्थिति ओ परिवेशक अन्तस्तलीय प्रतिक्रियाक अकृत्रिम स्वरूपक अभिज्ञान सम्भव होइछ।"6

शब्दक माध्यमे विविध-भाव-भंगिमाक चित्रांकन-

पत्रमे शब्दक माध्यमे साहित्यक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, व्यवहारिक प्रभृति गतिविधिक चित्रांकन होइत अछि तेँ न पत्रकेँ तत्कालीन समयक एतिहासिक दस्तावेज कहल गेल अछि। अधिकांश पत्रक आरम्भमे अभिवादन, कुशल होयबाक कामना, पारिवारिक वा सामाजिक विषयक चर्चा करैत साहित्य वा अन्य विषयक वर्णन होइत अछि आ किछु पत्रमे मुख्य विषयक चर्चहि टा रहैत अछि।

'मणिपद्मक पत्र' पोथी मध्य आरम्भमे 'किछु पत्र' शीर्षकक अन्तर्गत मणिपद्मजी द्वारा रामदेव झा, भीमनाथ झा, अर्जुन बाबू, वीरेन्द्रजी, सुवन्धु श्री, राजनन्दन लाल दास आ प्रेमशंकर सिंहकेँ लिखल ग्यारहटा पत्र संकलित अछि; जाहि मध्य मुख्य रूपसँ साहित्य विषयक आ संगहि सांस्कृतिक, सामाजिक प्रभृति विषयक उत्कृष्ट कोटिक चर्चा भेल अछि। रामदेव बाबूकेँ अपन नाटक विषयक बात लिखलनि, भीमबाबूकेँ लवहरि-कुशहरि पर लगले लागल नौ टा निबन्ध पठेबाक बात आ अन्य विधा विषयक बात लिखलनि, अर्जुन बाबूकेँ अपन 'अर्धनारीश्वर' उपन्यास सम्बन्धमे लिखलनि; वीरेन्द्रजीकेँ लोक नाट्य, लोक संस्कृति, लोक गीत प्रभृति विषयक बात लिखलनि अछि। आदि-आदि। भीमबाबूकेँ उक्त बात कोना पत्रमे संक्षिप्तहि सरल-सहज ओ स्पष्ट रूपेँ लिखलनि द्रष्टव्य थिक-

"बहेड़ा

11.07.73

प्रेममय श्री भीमनाथजी नमस्कार,

कृपा कार्डक हेतु धन्यवाद। बाहर छलौ। कृपया विलम्ब लेल क्षमा करब। लवहरि-कुशहरि पर लगले-लागल नौ टा निबन्ध पठा रहल छी। नाटक, कथा, कविता, आलोचना आ रिपोर्ट पठा रहल छी। नाटक, कथा, कविता, आलोचना आ रिपोर्ट अवाध गतिसँ जायत। श्री मधुपजी पर संस्मरण सेहो जेवे करत। हमरा घरक फुरसति आब भेट जकाँ गेल अछि।

आशा जे अहाँ निके सुखे हैव आर सब नीके। सहस शुभकामनाक संग।

-स्नेहाभिलाषी, मणिपद्म"7

मणिपद्मजी, वीरेन्द्रजीकेँ लोक नाट्य, लोकगीत, लोक नृत्य आ अन्य साहित्यिक विषयक बात पत्रमे लिखलनि। लोक नृत्य, लोकगीत आ लोक नाट्य विषयक विवेचन जे अक्षरसः समीचीन अछि, द्दष्टव्य थिक-

"श्याम-चकेव, जट-जटिन, घसकट्टी, करिया झूमरि आ आम-महुक व्याह, गत-नाट अछि। लोरिक, सहलेस, पँमरिया, दुलरा-दयाल (दयाल सिंह) आ नारदीय आदि अइ सै भिन्न अछि। वस्तुतः आवश्यकता अछि- लोक नाट्य, गीत नाट्य आ लोक नृत्यकेँ विकछेवाक। मिथिलाक लोक- नाट्यक स्वरूप किछु भिन्न प्रकारक अछि आ ओ 'अपने-स्वरूप' मे स्वीकार कैल जयबाक चाही। अहि परम्परा सबहिक अवशेष एखनहुँ वर्तमान अछि। नीक टेप रेकर्डर आ केमराक संग धैर्यशील खोज चाही। हम अइ क्रममे किछु उपर करइमे संग देव। उपर करा देव। यथार्थ स्थिति तै इ अछि जे अहि महान काज लै एकटा इन्स्टीच्यूट चाही जकर समय आबि गेल अछि।"8

'लीखि पठाओल आखर' पोथीक पत्र सभक मध्य कतेको पत्रमे पत्र-पत्रिका आ मैथिली पोथी सभक विषयमे साहित्यिक चर्चाक क्रममे सांस्कृतिक ओ सामाजिक विवेचन भेल अछि। पत्र संख्या 164 मे मार्कण्डेय प्रवासी भीमबाबूकेँ नमस्कार करैत लिखैत छथि, जे- "लगभग दू कालममे अर्थात् फुल स्केप कागत पर छौ-सात पृष्ठमे सम्पूर्ण दरभंगा जिलाक प्राचीनसँ अद्य-पर्यन्तक साहित्यकार लोकनिक चर्चा करैत एक लेख पठाउ। अहाँ तऽ साहित्यक पंजीकार थिकहुँ ने! जिलाक सम्पूर्ण साहित्य वैभव एकेटा लेखमे ठसमठस अँटि जयबाक चाही।.....हमर मिथिलाांचल वला लेख देखने रही? केहन लागल?"9

‘लिखि पठाओल आखर’ पोथीक पत्र संख्या-195मे पत्रिकाकेँ प्रजातांत्रिक आधार देबाक संबंधित विवेचन जीवकान्त जीक द्वारा कयल गेल अछि तँ पत्र संख्या- 204मे दहेज-पीड़न, दहेज हत्यासँ सम्बन्धित कथा, नाटक, कविता आदिक।

उक्त पोथीक अधिकांश यथार्थपरक पत्रमे साहित्यिक चर्चा भेल अछि, संगहि अन्य विषयक चर्चा जे एक दिस गद्य साहित्यक पत्र-विधाक महत्त्वमेँ बढ़बैत अछि तँ दोसर दिस तत्कालीन समयक विविध विषयक ज्ञानकेँ।

काव्यशास्त्रीय तत्वावबोधन-

काव्यशास्त्रीय तत्व (गुण) काव्यकेँ उत्कृष्टता प्रदान करै अछि, आओर चीरकालिक बनबैछ। मैथिली पत्र-साहित्य मध्य अधिकांश साहित्यकार व विविध क्षेत्रक ख्याति प्राप्त लोकक पत्र गद्यहिमे अछि आ किछु साहित्यकारक पत्र पद्यहुमे; यथा- मधुपजी, मार्कण्डेय प्रवासी, हरिमोहन झा प्रभृतिक। छन्द छोड़ि आन काव्यशास्त्री गुण तँ गद्योमे रहिते अछि। एहि सभ पत्र सभक मध्य काव्यशास्त्रीय गुण, यथा- छंद, अंलकार, रस, गुण, प्रकृति-चित्रण आदिक उदाहरणक उल्लेख करब अनिवार्य बुझना जाइत अछि। वाक्यमे प्रयुक्त अक्षरक संख्या एवं क्रम, मात्रा गणना तथा यति-गतिसँ सम्बंद्ध विशिष्ट नियमसँ नियोजित पद्य रचना छंद कहबैत अछि। छंद काव्यकेँ लय प्रदान करैत अछि तऽ अंलकार सौंदर्य, रस पाठककेँ आनन्दक सागरमे डुबाबैछ तँ प्रकृति-चित्रण मनकेँ भावैत अछि।

रोला छनदक उदाहरण-

(प) “देखि ‘त्रिधारा’ पठा देल निज अनुजक द्वारा।
तकर प्रकाशित रूप शीघ्र देखबथु श्रीतारा।“10

(पप) गुरू-जन-चरण-सरोज,पर ‘मधुप’क गुंजन कहब।
धिया-पुता हित भोज, करब बाँटि मधु-आशिषक।।“11

चौपाइ छन्दक उदाहरण-

“सवस्ति मंगलालय छन्दो लय
रीति पिरीति रीति निष्णात।
भी मलि भीम समान भीमबाबू
शत शुभ आशिष-जलजात।।“12

दोहा छन्दक उदाहरण-

“चिरंजीवि श्री अमरजी! हमर शुभाशीर्वाद।
कुशल एतै होएब अहुँ, सकुशल ओ साह्लाद।।
आगाँ मिथिला भ्रमण हित, कहिया फुरसति हैत।
उद्यत छथि श्रीकिरणजी, की औरो क्यो जैत।।“13

हरिगीतिका छन्दक उदाहरण-

“कुशल एतै, विश्वास हमर अपनहुँ होएब साह्लाद।
आगाँ महिनामक मुक्तीबाबूक कन्याक प्रसंग;
पनिचोभक की कथा भेलै से लिखल जाय सोमंग
अप्पन बुझि पड़बैक ताहिमे लिखु की और विशेष,
हमर परमप्रिय मित्र थिका ओ, और कहक की शेष।।“14

अन्त्यानुप्रास अंलकारक उदाहरण-

"बाद तकर अपने लिखू, सुविधा केर अनुसार।
परिषद् केर सदस्य हित, घूमब आ परचार।।
वास्तु लेब कहिआ अहाँ, नवका घरमे बाउ।
छी लिखैत कहिया कहू, पातो नेने आउ।।"15

वृत्यानुप्रास अंलकारक उदाहरण-

"जे उमापति पावनतम
पटुतम पण्डितवर्ग प्रशंसित
प्रथित पराग पारिजातक
प्रसिद्धतर पात-पातसँ पुलकित प्राण
पुण्य-आत्मजनसँ औखन प्रणम्य।"16

छेकानुप्रासक उदाहरण-

"पूज्य स्वर्गीय विज्ञवर खुद्दीझाजी
'नागेशोक्तिप्रकाश' लीखि छक्का छोड़ौल
तत्कालिक विवुध-समाजकेर।"17

यमक अंलकारक उदाहरण-

"कारण? बात रसक प्रेमी रहितहुँ
अछि बातरसक उत्पात,
पेटक दुख नहि, तैयो पेटक
दुख- चपेटसँ छी नहि कात।।"18

वीप्सा अलंकारक उदाहरण-

"कीनि रहल छी जे नगर,
बेचि-बेचि कऽ गाम।
कथमपि नहि भऽ सकै
चून- तमाकू बन्न।"19

रूपक अलंकारक उदाहरण-

"तै पर संगे भीम मनमोहन
मोह न शैत्योक करैत,
कविता-सुधा-सुधार बहाकऽ
छला समयकेर ज्ञान हरैत।।"20

उत्प्रेक्षा अलंकारक उदाहरण-

"तीर-समीर, पहुँचितहिँ कमला-तीर
मीर सन जनु भऽ गेल,
श्रवण पड़ैत श्रवण- अभिनय-संगीत
सुधेँ जनु शिथलित भेल।"21

उपमा अंलकारक उदाहरण-

"सवस्ति मंगलालय छन्दो लय
रीति पिरीति रीति निष्पात।
भी मलि भीम समान भीम बाबू
शत शुभ आशिष-जलजात।"22

करूण रसक उदाहरण-

"छी वत्स! हम साह्लाद।
प्रथम पत्र अहाँक
बहुतो दिन बितल हम पाबियोकऽ
देखि तुअ सन्यास
अति विकल
नहि देल वत्स! जबाब।"23

प्रसाद गुणक उदाहरण-

"चिरंजीवि श्रील भीमबाबू!
शुभोदय, शतशः शुभाशीर्वाद,
कुशल पाबि अहाँक
एखनहुँ चित अछि साह्लाद।"24

प्रकृति चित्रणक उदाहरण-

"कोन कोइलख?
जकर पश्चिम भाग
सकल कलि-मल मंथनकारिणि
स्वयं कमला
ञ्रिक तटपर
विवुधवृन्दहुँ वन्दिता श्री भद्रकाली दया कऽ
,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

जहि ग्रामोत्तमक दक्षिण

भगवती भुवनेश।“25

एहि प्रकारक उदाहरण सभसँ काव्यशास्त्रीय तत्वक अवबोधन स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैत अछि।

उपर्युक्त वैशिष्ट्यक अतिरिक्त आओरो कतोक वैशिष्ट्य साहित्यकार लोकनिक पत्र सभकेँ पढ़लासँ ज्ञात होइत अछि; यथा- गोपनीय सत्यक उद्घाटन, मातृभूमि ओ मातृभाषासँ प्रेम आदि।

पत्राचारसँ क्रमशः भावनात्मक जुड़ाव प्रगाढ़ भऽ जाइत अछि आ प्रगाढ़ भेला पर गोपनीय घटना सबक जानकारी साहित्यकार लोकनि साहित्यिक बन्धुकेँ दैत छथि, जे भविष्यमे अमूल्य सामग्री सिद्ध होइछ। एहन व्यक्तिक पत्र सभ यथार्थ ओ कोनो प्रकाशित स्रोतसँ बेसी आधिकारिक मानल जाइत अछि। एहि सम्बन्धमे श्रीशंकरदेवक विचार द्रष्टव्य थिक-

“साहित्यक इतिहास लेखनमे सेहो साहित्यकार लोकनिक वैयक्तिक पत्राचारसँ प्राप्त सूचनाकेँ प्रमाणिक मानि ओकरा ग्रहण करबाक परिपाटी चलि पड़ल अछि। अतीत कालमे साहित्यकार लोकनि द्वारा अपनामे कयल गेल पत्राचारसँ अनेक अज्ञात-अनभिज्ञात अन्तः कथाक जनतब भेटैछ जे कोनो प्रकाशित स्रोतसँ बेसी अधिकारिक मानल जाइछ। साहित्यकार लोकनिक साहित्यिक जीवन, परिवेश, अपन क्रिया-कलापसँ जुटल कतिपय घटना सब एहन होइछ जकरा सार्वजतिक करब सम्भव नहि होइछ। अतः एहन घटनाकेँ साहित्यकार लोकनि अपन आप्त साहित्यिक बन्धुक बीच पत्राचारक माध्यमे सूचित करैत छथि। एहि पर चिन्तन-मनन करैत पत्रमे अपन दृष्टिकोणकेँ शब्दबद्ध करैत छथि। यैह पत्र सभ भविष्यमे जा कऽ अपूर्व सामग्री सिद्ध होइछ।“26

प्रायः सभ साहित्यकारकेँ अपन मातृभूमि ओ मातृभाषासँ प्रेम रहबे करैत अछि। पत्रक माध्यमे मातृभूमि ओ मातृभाषाक कल्याणार्थ लोककेँ एकजूट करैछ आ गाम भ्रमणक योजना, सभा, गोष्ठी, पोथी, पत्र-पत्रिका प्रकाशन आदिकेँ मूर्त रूप प्रदान करैछ। एहन कतोक पत्र पत्र-साहित्य मध्य उपलब्ध अछि; उदाहरणार्थ मधुपजी, अमरजीक नामे लिखल पत्रक किछु पाँती द्रष्टव्य थिक-

“चिरंजीवि श्रीअमरजी! हमर शुभाशीर्वाद।

कुशल एतै होएब अहूँ, सकुशल ओ साह्लाद।।

आगाँ मिथिला भ्रमणहित, कहिया फुरसति हैत।

उद्यत छथि श्रीकिरणजी, की औरो क्यो जैत।।“27

उपर्युक्त वर्णनसँ पत्र-साहित्यक आजुक परिप्रेक्ष्यमे प्रासंगिकता अवश्ये अछि से सुस्पष्ट होइत अछि। वर्तमान वैज्ञानिक युगमे टेलीफोन, सेलोफोन, इंटरनेट, ई-मेल आदिक बहुत बेसी उपयोगक कारणेँ पत्र-साहित्य होइत ह[a]ासक रक्षा हेतु, उक्त साहित्यक संवर्धन आवश्यके नहि अनिवार्य सेहो बुझना जाइत अछि।

संदर्भ सूचीः-

1.मौन, प्रफुल्लकुमारसिंह,2006,मणिपद्मक पत्र, कर्णगोष्ठी कोलकाता,पृ.- प्रकाशकीय।

2.झा, दमनकुमार,2016, लीखि पठाओल आखर, किसुन संकल्प लोक सुपौल, पृ.स.-05

3.झा, शंकरदेव, 2001, अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, पृ.स.-11

4.कर्ण, चन्द्रमोहन, 2023,देसिल बयना; शीर्षक-पत्रक दर्पणमे महाकवि आरसी, ले. श्री कृतिनारायण मिश्र; प्र.- देसिल बयना,मैथिली साहित्य मंच, हैदराबाद,पृ.-192.

5.झा, भीमनाथ, 1988, ‘मधुप’क पत्र भीमनाथ झाक नाम, सीतादाइ, विदेह मण्डन,मधुबनी,पृ.-50

6.झा, शंकरदेव, 2001, अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, पृ.स.-13

7.मौन, प्रफुल्लकुमारसिंह,2006,मणिपद्मक पत्र, कर्णगोष्ठी कोलकाता,पृ.-01.

8.वैह,पृ.स.-04.

9.झा, दमनकुमार,2016, लीखि पठाओल आखर, किसुन संकल्प लोक सुपौल, पृ.स.-135

10.झा, भीमनाथ,1988, 'मधुप'क पत्र भीमनाथ झाक नाम, सीतादाइ, विदेहमण्डन,मधुबनी,पृ.-23

11.वैह,पृ.स.-13

12.वैह,पृ.स.-15

13.झा, शंकरदेव, 2001, अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, पृ.स.49.

14.वैह,पृ.स.-49

15.वैह,पृ.स.-49

16.झा, भीमनाथ, 1988, 'मधुप'क पत्र भीमनाथ झाक नाम, सीतादाइ, विदेह मण्डन,मधुबनी,पृ.-14.

17.वैह,पृ.स.-14

18.झा, दमनकुमार,2016, लीखि पठाओल आखर, किसुन संकल्प लोक सुपौल, पृ.स.-21

19.वैह, पृ.स.-19

20.झा, भीमनाथ, 1988, 'मधुप'क पत्र भीमनाथ झाक नाम, सीतादाइ, विदेह मण्डन,मधुबनी,पृ.-16.

21.वैह,पृ.स.-16

22.वैह,पृ.स.-15

23.वैह,पृ.स.-28

24.वैह,पृ.स.-20

25.वैह,पृ.स.-21

26.झा, शंकरदेव, 2001, अमरजीक परिचय-संसार ओ पत्राचार, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, पृ.स.-13.

27.वैह, पृ.स.-49.